प्रथमः पाठः

ईश वन्दना[1]

निम्नलिखित पद्यांशों का सरलार्थ प्रसंग सहित लिखें

प्रभो! भवदीय महीमायं

कथम् अज्ञेन ज्ञातव्यः।

कृपा कवच बिना विजयः

कथम् अबलेन प्राप्तव्य।।

प्रसंग :– प्रस्तुत पंक्तियॉ हमारी पाठ्य पुस्तक संस्कृत पुस्तक –8 में से प्रथमः पाठ ईश वन्दना में से ली गईं हैं।इसमें कवि ने बताया है कि प्रभु की कृपा के बिना वह कैसे विजय प्राप्त कर सकेगा।

सरलार्थ :–हे भगवान ! आप की यह महीमा मैं अज्ञानी कैसे जान सकता हूँ? आप की कृपा रुपी कवच कें बिना मैं कमजोर किस प्रकार विजय प्राप्तकर सकूंगा ।

त्वदीय उच्चता गगनं

अधःकर्तुं समर्था चेत।

कथं तव भव्य वेशोSयं

मया खर्वेण ध्यातव्यः।।

प्रसंग :– :– प्रस्तुत पंक्तियॉ हमारी पाठ्य पुस्तक संस्कृत पुस्तक –8 में से प्रथमः पाठ ईश वन्दना में से ली गईं हैं। इस में कवि ने प्रभु के शानदार वेश के बारे में बताया है।

सरलार्थ : –आप की उच्चता आसमान को नीचा करने में समर्थ है। आप का यह भव्य वेश किस प्रकार मुझ बौने के द्वारा ध्यान करने योग्य है।

निरवलम्बः तवाधीनः

पिता माता सखा त्वं मे।

तृषित सारंग बालाय

दया बिन्दुः प्रदातव्य।।

प्रसंग :– :– प्रस्तुत पंक्तियॉ हमारी पाठ्य पुस्तक संस्कृत पुस्तक –8 में से प्रथमः पाठ ईशवन्दना में से ली गईं हैं। इस में कवि ने अपने आप को बेसहारा कहा है कि वह प्रभु के अधीन है।

सरलार्थ : –हे प्रभु! मैं बिना आसरे के हूँ। तुम्हारे आधीन हूँ।मेरे माता पिता और सखा तुम्हीं हो। प्यासे सारंग के बच्चे के लिए दया रुपी बूंदे प्रदान करें।

1

न यावद वरद हस्तस्ते

अनाथ शावकम् रक्षेत।

कथं तावत् सुधासारः

सुलधु हंसेन पातव्य।।

प्रसंग :– प्रस्तुत पंक्तियॉ संस्कृत पुस्तक –8 में से ली गईं हैं। यह प्रथमः पाठ ईश वन्दना में से ली गईं है। इस कवि ने प्रभु से अपनी रक्षा की प्रार्थना की है।

सरलार्थ : –जब तक तुम्हारा वरदान रुपी हाथ मुझ अनाथ शावक की रक्षा नहीं करेगा, तब तक कैसे अमृत तत्व मैं छोटा सा हंस पी सकूंगा।